CHAPTER 42

MUSIC

Doctoral Theses

443. झा (सुमेश चन्द्र)
बिहार की लोक-संस्कृति एवं लोकगीतों का पारस्परिक सम्बन्ध ।
निर्देशिका : प्रो. गीता पैन्तल
Th 18155

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में लोकसंस्कृति, लोकसंस्कृति का उद्भव एवं विकास, लोकसंस्कृति का इतिहास, लोकसंस्कृति की स्वतंत्र सत्ता, लोकसंस्कृति का उद्देश्य एवं लोकसंस्कृति का वर्तमान पर विस्तृत वर्णन किया गया है । 'लोक' शब्द की व्युत्पत्ति तथा व्याख्या, लोक साहित्य और उसकी विशेषतायें एवं 'लोकगीत' की परिभाषा और महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है । 'लोक' शब्द का अर्थ, 'लोक' शब्द की प्राचीनता, 'लोक' शब्द की परिभाषा, 'संस्कृति' शब्द का अर्थ एवं लोकगीत और सामाजिक चेतना पर विस्तृत वर्णन किया गया है। लोक गीतो का भौगोलिक वर्णन, सामाजिक वर्णन, आर्थिक वर्णन, ऐतिहासिक वर्णन एवं धार्मिक वर्णन की गई है । बिहार की विभिन्न लोकसंस्कृति एवं प्रमुख लोकगीतों में मिथिला की लोकसंस्कृति एवं संस्कार के लोकगीत, अंगिका की लोकसंस्कृति एवं सस्कार के लोकगीत, मगही लोकसंस्कृति एवं संस्कार के लोकगीत एवं भोजपुरी लोकसंस्कृति एवं संस्कार के लोकगीत पर विस्तृत वर्णन किया गया है। लोकसंस्कृति एवं लोकगीतों का पारस्परिक संबंध के अंतर्गत लोकगीत के परिमार्जन का प्रश्न, लोकसंस्कृति-मानवीय मूल्यों के शिवं का संदेश, लोकगीत एवं लोक संस्कृति के अध्ययन का महत्त्व एवं लोकसंस्कृति एवं लोकगीतों का पारस्परिक संबंध को समझाया गया है। पारस्परिक संबंध पर विस्तृत चर्चा की गयी है।

विषय सूची

1. लोक-संस्कृति का उद्‌भव एवं विकास। 2(भाग एक). लोकगीतों की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि। (भाग दो). बिहार की लोक संस्कृति की समीक्षा। 3. लोकगीतों में विभिन्न दृष्टिकोण। 4. बिहार की विभिन्न लोकसंस्कृति एवं प्रमुख लोकगीतों के प्रकार। 5. लोकसंस्कृति एवं लोकगीतों का पारस्परिक संबंध। परिशिष्ट। उपसंहार ।

444. पाराशर (स्मिता)

भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार करने में 'संगीत नाटक अकादमी' तथा 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद' (I.C.C.R) की भूमिका : एक समीक्षात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन
Th 18271

सारांश

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार को भारतीय संस्कृति की समृद्धि की प्रदर्शनकारी कलाओं को सुरक्षित करने की आवश्यकता महसूस हुई। इसी उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए ''संगीत नाटक अकादमी'' तथा ''भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद'' (I.C.C.R.) की स्थापना की गई। संगीत नाटक अकादमी भारत की पहली राष्ट्रीय अकादमी थी जो संगीत, नृत्य और नाटक को राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्व देती थी। 'संगीत नाटक अकादमी' स्वशासित तंत्र की तरह कार्य करती है यह भारतीय संगीत को प्रोत्साहित और संरक्षित करने के अलावा विभिन्न कार्यक्रम तथा विचारगोष्ठियों का आयोजन करती रहती हैं तथा 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद' (I.C.C.R) भारत के ब्राह्य सांस्कृतिक संबंधों से संबंधित नीतियों और कार्यक्रमों का आयोजन करती है तथा भारत व अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देती है। इसके फलस्वरूप आज विश्व भर में संगीत, नाट्य और नृत्य अपनी अलग पहचान बना सके है ।

विषय सूची

1. संगीत । 2. संगीत नाटक अकादमी । 3. अकादमी के पुरस्कार, प्रशिक्षण एवं

सम्मान। 4. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद। 5. अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की छात्रवृतियाँ व उनका कल्याण। उपसंहार। परिशिष्ट एवं सन्दर्भ ग्रंथ सूची ।

445. BAHL (Kavita)

Animation in Advertising.

Supervisor : Prof. S N Lahiri

Th 18153

Abstract

Through the course of this research it has been understood that animation is a direct form of communication. In India it has been observed that animation has been used for making promotional films on government policies based on educational and social issues for the government of India since its advent from the initial ventures of Film Division of India. Indian advertising industry is using animation for commercials and other forms of communications. Our creative minds have been using this medium for feature films and TV serials also. Our society is becoming more and more visually centered; there are numerious ways of applying the art form of animation. Entertainment, instruction and information are only a few of the areas that animation can be applied. There is no limit, only one's imagination, when it comes to taking the next step into future in animation.

Contents

1. Introduction. 2. History of a new art. 3. Animation techniques. 4. Television and other media. 5. Psychological impact of animation. 6. Animation in Indian advertising. 7. Indian animators. 8. Animation studies. 9. Conclusion.

446. बहुगुणा (वन्दना)

विदुषी सुमति मुटाटकर जी का व्यक्तित्व एवं संगीत जगत को उनका अमूल्य योगदान ।

निर्देशिका : प्रो. मंजुश्री त्यागी

Th 18265

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में विदुषी सुमति मुटाटकर जी के जन्म बाल्यकाल, पारिवारिक वातावरण उनकी शिक्षा व्यक्तित्व व स्वभाव आदि की विस्तृत चर्चा की गई है । विदुषी सुमति मुटाटकर जी ने जिन-जिन गुरूजनों से तालीम व शिक्षा प्राप्त की उनके विषय में विस्तृत चर्चा की गई है। एक श्रेष्ठ रचनाकार, उत्कृष्ट गायिका, संगीता । शास्त्री व श्रेष्ठ संगीत चिंतक के रूप में विदुषी सुमति मुटाटकर के कार्यों का विस्तृत का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। एक श्रेष्ठ प्रशासक के रूप में उन्होंने किन-किन संस्थाओं में क्या-क्या पद ग्रहण किये तथा किस प्रकार अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह किया इन तथ्यों का विवेचन है, साथ ही एक श्रेष्ठ गुरू व शिक्षिका के रूप में समाज के प्रति उनकी किस प्रकार की भूमिका रही, इस तथ्य को समक्ष लाने का प्रयास किया गया है। इसमें विभिन्न विद्वानों, शिक्षकों, कलाकारों आदि के साक्षात्कार द्वारा विदुषी सुमति मुटाटकर जी के व्यक्तित्त्व व कार्यों को निकटता से जानने का प्रयास किया गया है, साथ ही समाचार पत्रों की कुछ टिप्पणियां, विदेश भ्रमण व प्रस्तुतियां तथा अवार्ड्स व उन्हें प्राप्त सम्मान आदि की भी विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई है।

विषय सूची

1. जीवनवृत्त । 2. विदुषी सुमति मुटाटकर जी की तालीम एवं गुरू । 3. विदुषी सुमति मुटाटकर जी का संगीत जगत को अमूल्य योगदान । 4. विदुषी सुमति मुटाटकर एक कुशल प्रशासक व आदर्श गुरू । 5. व्यक्तित्व को उभारने में सहायक अन्य सामग्री । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

447. भुपिंदर सिंह

सिख भक्ति संगीत में रबाबियों की परंपरा का उद्गम, विकास एवं परिवर्तित स्वरूप ।

निर्देशिका : डॉ. नूपुर राय चौधरी

Th 18270

सारांश

सिख भक्ति धारा में संगीत का महत्वपूर्ण एवं विशेष स्थान है। सिख धर्म पूरा ही संगीतमय है। सिख धर्म में संगीत के इस महत्व को हम स्पष्ट देख सकते हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि सिखों का पवित्र ग्रंथ श्री गुरू ग्रंथ साहिब में बाणी रागों में उल्लिखित है। किसी भी धर्म ग्रंथ में हमे ऐसा देखने को नहीं मिलता। वाद्यों का संगीत में महत्वपूर्ण स्थान होता है तथा बिना वाद्यों के संगीत की किसी भी विधा की कलपना भी नहीं की जा सकती । रबाब वाद्य की अगर हम बात करे तो पाएंगे कि यह वाद्य भारत ही नहीं अपितु दुनिया के कई देशों में पाया जाने वाला एक प्राचीन वाद्य यंत्र है। भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तुर्की, मलेशिया, साउथ अफ्रीका, इंडोनेशिया, पर्शिया, इरान, इराक आदि देशों में वहां पर प्रचलित वाद्य यंत्रों में रबाब की गणना होती है।

विषय सूची

1. सिख भक्ति संगीत की विशाल परंपरा। 2. रबाब वाद्य . ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा वर्तमान। 3. रबाबी कीर्तनकारों की परंपरा का उद्गम एवं विकास। 4. उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी के रबाबी कीर्तनकार। 5. वर्तमान में रबाबी कीर्तनकारों की परंपरा एवं स्वरूप। 6. रबाबियों द्वारा गाई गई गुरबाणी कीर्तन की रचनाएं (स्वरलिपि सहित)। उपसंहार । परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची ।

448. मनजीत कौर

कपूरथला रियासत के शास्त्रीय संगीतमज्ञ एवम् गुरूवाणी कीर्तनकारों के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : प्रो. अनुपम महाजन

Th 18273

सारांश

प्रस्तुत शोध में कपूरथला रियासत के शास्त्रीय संगीतज्ञ एवम् गुरबानी कीर्तनकारों के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन तथा विवेचन करने का प्रयास किया गया है । जहाँ एक ओर घरानेदार गायाकों ने कपूरथला गायकी का प्रचार व विस्तार

किया है वहाँ आज के संगीत विद्यार्थी भी भारतीय संगीत को अक्षुण्ण रखते हुए संगीत की साधना करते हुए उसका प्रचार व प्रसार कर रहे है।

विषय सूची

1. पंजाब की ऐतिहासिकता, संगीतिक परिपेक्ष्य, संगीतिक घराने। 2. कपूरथला रियासत का इतिहास व संदर्भ, भौगोलिक स्थिति। 3. शास्त्रीय गायन के परिपेक्ष्य में कपूरथला घराने की गायन परम्परा, कपूरथला रियासत की स्थापना व शासकों का संगीत के प्रति अनुराग, कपूरथला घराने का उद्गम एवं विकास, कपूरथला घराने की वंश परम्परा, विभिन्न गायकों की ऐतिहासिकता। 4. कपूरथला घराने की गायन परम्परा में शास्त्रीय संगीतज्ञों का रबाबी और सिक्ख कीर्तनकारों का योगदान। 5. भारतीय संगीत तथा गुरबानी संगीत के क्षेत्र में प्रचलित गायन शैलियां। 6. गुरबानी संगीत के परिपेक्ष्य में कपूरथला घराने का योगदान, गुरबानी संगीत की राग रचनाओं के प्रदर्शन में वाद्यों की भूमिका । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

449. विजय कुमार

भारतीय संगीत में 'शुष्काक्षरों' के प्रयोग की परंपरा : एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

Th 18272

सारांश

शुष्काक्षरों को हम शुष्क या निरर्थक संज्ञा देते हैं वे वास्तव में निरर्थक या अर्थहीन नहीं हैं। उनका आध्यात्मिक अर्थ तो है ही, अपने आप में ये मनोरंजक भी साबित हुए है। अन्यथा इन्हें कभी निबद्ध गीतों का स्वरूप प्राप्त नहीं होता। तराना इसका बहुत सशक्त उदाहरण है। सम्पूर्ण ब्रह्मांड में इन शुष्काक्षरों का गायन गांधर्वों द्वारा माना गया है – ये प्रमाणित करता है कि भारतीय संगीत में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परंपरा एक सार्थक अक्षरों की पंरपरा का निर्देश देते हुए उदात्त की ओर प्रेरित करती हुई प्रतीत होती है। जिस प्रकार संगीत अध्यात्म की भूमि पर सदैव फला-फूला है उसी प्रकार ये शुष्काक्षर इस परम्परा को सींचने का कार्य सिद्ध करते हैं।

विषय सूची

1. भारतीय सांगीतिक साहित्य : शुष्काक्षरों के संदर्भ में। 2. शास्त्रानुसार प्राचीन कालीन गान-विधाओं में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परंपरा। 3. मध्यकालीन गान- विधाओं में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परंपरा। 4. शुष्काक्षर : आधुनिक गेय विधाओं के परिप्रेक्ष्य में। उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

450. SARAVANAN (Meera)
Magazine A Visual Communication.
Supervisor : Prof. S N Lahiri
Th 18154

Abstract

With the help of comparative study of well known and or unknown magazines offered by the media present research discuss some of the virtues of vision and the written language and that magazine whether a natinally distributed news stand publication for consumers or a specialized title with qualified circulation, has shown a rise due to growth in consumerism leading to high buying power of the masses. These added audience were increasingly fascinated by electronic media's dimensions and critics predicted the demise of the printed word, which made magazines face tough challenges. Magazines responded and projected well to this huge challenge. It allowed the advertiser too, to reach a select target audience with a high quality of presentation techniques. Over time, design for magazines developed not only for utilitarian consideration but also as a true art form.

Contents

1. Introduction. 2. From gutenberg to magazines. 3. Evolution of a magazine. 4. Magazine design. 5. Anatomy of a magazine. 6. Attributes of the magazine. 7. Magazine publishing/printing. 8. Types of magazine. 9. Role of magazines. Conclusion and bibliography.

451. सारिका

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गज से बजाये जाने वाले वाद्यों की उत्पत्ति, विकास एवं प्रयोग : एक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. सुनीता धर

Th 18156

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में वाद्यों के वर्गीकरण का विवेचन किया गया है। इसमें वाद्यों को पुरातन सयम में कैसे प्रयोग किया जाता था तथा वाद्य शब्द की उत्पत्ति, वाद्य शब्द की परिभाषा, वाद्यों को कितने भागों में विभाजित किया गया है इस विषय पर चर्चा की गई है। इस में सांरगी के उद्गम के बारे में बताया है - इसका जननी स्थान क्या है, इसके उद्गम् के बारे में भिन्न-भिन्न मत पाए जाते हैं इस विषय पर चर्चा की गई है। सांरगी को उस समय किस दृष्टि से देखा जाता था आदि के बारे में लिखा है। इस में वायलिन के उद्गम के बारे में लिखा है - वायलिन को कहां का वाद्य माना जाता है (हिन्दुस्तानी एवं विदेशी) इस पर संक्षिप्त चर्चा की गई है। इस वाद्य को किन नामों से जाना जाता था तथा विदेश में क्या रूप पाया जाता था आदि।

विषय सूची

1. भाररतीय संगीत का एतिहासिक स्वरूप । 2. वाद्यों की उत्पत्ति एवं वर्गीकरण। 3. वीणा का उदगम व विकास। 4. सांरगी का उदगम एवं विकास । 5. वायलिन का उदगम एवं विकास। 6. दिलरूबाा तथा इसराज का उदगम एवं विकास। 7. कुछ अन्य प्राचीन एवं नवीन गज वाद्य एवं बजाने वाले कलाकार। उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची।

M.Phil Dissertations

452. आनंद (कमलेश कुमार)

बनारस के प्रमुख गायक कलाकारों का संगीत जगत में योगदान।

निर्देशक : प्रो. अंजली मित्तल

453. अनूजा
सितार वादन में परंपरागत वादन शैली और वर्तमान युग में उसका बदलता स्वरूप : एक विश्लेषण ।
निर्देशक : प्रो. अंजली मित्तल

454. उपाध्याए (पिंकी)
भारतीय भक्ति संगीत परम्परा के अन्तर्गत प्रमुख कवित्री मीराबाई का योगदान।
निर्देशक : प्रो. नजमा परवीन अहमद

455. AIJAZ AHMAD
Saaz Nawaz Gharan of Sufiana Kalaam of Kashmir.
Supervisor : Prof. S Kasliwal

456. चित्रा शंकर
भारतीय संगीत के अनुसंधान में पुरातात्विक स्त्रोतों का महत्त्व ।
निर्देशक : डॉ. एम शंकर मिश्रा

457. तिवारी (प्रवीण कुमार)
ललित कलाओं में संगीत का स्थान ।
निर्देशक : डॉ. ए नागपाल

458. दंग (नेहा)
सिक्ख सम्प्रदाय में भक्ति संगीत का परिवर्तनात्मक स्वरूप ।
निर्देशक : प्रो. एम बी सक्सैना

459. नमेश नन्दन
संगीत में व्यवसायिक्ता : एक अवलोकन ।
निर्देशक : प्रो. सुनीता धर

460. पाण्डे (चन्द्रेश)
हिन्दुस्तानी संगीत में टप्पा गायन विधा : एक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. ओ पी सिंह

461. PHONDNI (Himani)
Garhwal Mein Gaye Jane Wale Paramparik Lok Geeton Evam Lokrityon Ka Vivechanatmak Adhyayan.
Supervisor : Dr. S Goswami

462. भटनागर (सुक्रिति)
आर्य समाज की गुरूकुल शिक्षा पद्धति के अंतगर्त गाई जाने वाली ऋचाओं का सांगीतिक पक्ष ।
निर्देशक : प्रो. उमा गर्ग

463. MALHOTRA (Sukriti)
Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande Ki Bandishon Ka Vishleshnatmal Adhyayan.
Supervisor : Prof. Nazama Parveen Ahmad

464. MOHANARANI (S)
Special Status of Less Known Composers of Merit from Andhra Pradesh.
Supervisor : Dr. P B Kannakumar

465. यश प्रीत कौर
पंजाब की लोक संस्कृति में समाहित विभिन्न गेय विधाएं ।
निर्देशक : प्रो. मंजूश्री त्यागी

466. राज नंदिनी
हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रागों के स्वभाव की परिक्लपना।
निर्देशक : डॉ. नूपुर राय चौधरी

467. RANI
Pandit Kumar Gandharv Dwara Nirmit Ragaon Ka Vishisht Adyayan.
Supervisor : Dr. S Goswami

468. LAHORA (Pankaj)
Vartaman Pariprakash Mein Hajrat Amir Khusro Ke Sangeet Ka Mulyankan.
Supervisor : Dr. Prateek Chaudhuri

469. SHARMA (Amit)
Development of Khyal Gayan in Hindustani Classical Music With Special Reference to Gwalior Gharana.
Supervisor : Prof. Anjali Mittal

470. SHARMA (Garima)
Comparative Study of Gharana and Institutionalized Teaching Technique of Hindustani Classical Music.
Supervisor : Dr. Nupur Roy Chaudhry

471. शर्मा (भावना)
हिमाचल लोक संस्कृति में संगीत के समन्वय का शोध पूर्ण अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. एस शर्मा

472. शर्मा (सीनू)
स्वतन्त्र भारत मे हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रगति के लिए किए गए प्रयास ।
निर्देशिका : प्रो. सुनीता धर

473. SANJAY KUMAR
Bihar Ki Kala Sanskriti Evam Sangeet.
Supervisor : Pro. M Tyagi

474. संतोष कुमार
गजल गायन के क्षेत्र में विभिन्न गायकों का योगदान ।
निर्देशक : प्रो. उमा गर्ग

475. SARMAH (Urbee)
Impact of Assamese Folk Music on Assamese and Hindi Film Songs.
Supervisor : Prof. M B Saxena

476. SINGH (Tajinder Pal)
Musical Tradition in Sikhism - With Special Reference to Indian Ragas.
Supervisor : Dr. O P Singh

477. सुदेश देवी
उप शास्त्रीय संगीत की महिला कलाकारों द्वारा गाए उत्तर प्रदेश के लोकगीतों का अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. एस कासलीवाल

478. SUSHMA
Khyal Gayan Shaili Me Taan Pradhan Bandisho Ka Vishleshnatmal Adhayan.
Supervisor : Prof. Anupam Mahajan

479. SUHSEELA, S N
Critical Study of Merits and Demerits of the Gurukulam and the Modern Institutional Learning (With Special Reference to Karnatak Music).
Supervisor : Prof. Radha Venkatachalam

480. SUSHILA VISWANATHAN
Esteem Enjoyed by the "Nava - Grouping in Karnatak Music".
Supervisor : Dr. V Krishan Rao

481. सोनिया
हरियाणा लोकसंगीत में लोकगाथाओं की भूमिका।
निर्देशक : डॉ. एस शर्मा